CBSE Class 9 Social Science Important Questions History Chapter 2 यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रांति

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.
सन् 1905 ई. की रूस की क्रान्ति का प्रमुख कारण क्या था?
उत्तर:
जार का निरंकुश शासन।

प्रश्न 2.
फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात् यूरोप में किस तरह के विचार-समूहों का उदय हुआ?
उत्तर:
फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात् यूरोप में मुख्यतः तीन तरह के विचार-समूहों का उदय हुआ। ये थे-

- उदारवादी
- रेडिकल
- रूढ़िवादी।

प्रश्न 3.
रेडिकल किस तरह की सरकार के पक्ष में थे?
उत्तर:
रेडिकल ऐसी सरकार के पक्ष में थे जो देश की आबादी के बहुमत के समर्थन पर आधारित हो। ये महिला मताधिकार के समर्थक तथा जमींदारों व पँजीपतियों के विशेषाधिकारों के खिलाफ थे।

प्रश्न 4.
रूस में बोल्शेविक क्रांति कब हुई?
उत्तर:
सन् 1917 में।

प्रश्न 5.
रूसी क्रांति से पूर्व रूस में कौन-कौन से दल थे?
उत्तर:

- बोल्शेविक
- मेन्शेविक।

प्रश्न 6.
रूसी क्रान्ति में बोल्शेविक खेमे का नेतृत्व कौन कर रहा था?
उत्तर:

ब्लादिमीर लेनिन।

प्रश्न 7.
सर्वप्रथम रूसी क्रांति का झंडा कहाँ फहराया गया?
उत्तर:
पेत्रोग्राद में।

प्रश्न 8.
मताधिकार आन्दोलन किसे कहते हैं?
उत्तर:
वोट डालने का अधिकार पाने के लिए चलाये गये आन्दोलन को मताधिकार आन्दोलन कहते हैं।

प्रश्न 9.
राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं का क्या उद्देश्य था?
उत्तर:
राष्ट्रवादी कार्यकर्ता क्रान्ति के द्वारा ऐसे राष्ट्रों की स्थापना करना चाहते थे जिनमें सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हों।

प्रश्न 10.
कोऑपरेटिव क्या थे?
उत्तर:
कोऑपरेटिव ऐसे लोगों के समूह थे जो मिलकर चीजें बनाते थे और मुनाफे को प्रत्येक सदस्य द्वारा किये गये काम के हिसाब से आपस में बांट लेते थे।

प्रश्न 11.
समाजवाद के बारे में नए तर्क किसने पेश किये?
उत्तर:
कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने।

प्रश्न 12.
द्वितीय इन्टरनेशनल क्या थी?
उत्तर:
द्वितीय इन्टरनेशनल एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था थी जो समाजवादियों ने अपने प्रयासों में समन्वय लाने के लिए बनाई थी।

प्रश्न 13.
रूसी क्रान्ति से आपका क्या आशय है?
उत्तर:
रूस में फरवरी, 1917 में राजशाही के पतन एवं अक्टूबर की घटनाओं को रूसी क्रान्ति के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 14.
प्रथम विश्व युद्ध के समय रूस का शासक कौन था?
अथवा

https://www.evidyarthi.in/

1914 में रूस पर किसका शासन था?
उत्तर:
1914 में रूस पर जार निकोलस II का शासन था।

प्रश्न 15.
कोई चार वर्तमान यूरोपीय देशों के नाम बताइये जो पूर्व में रूसी साम्राज्य का हिस्सा थे।
उत्तर:

- लातविया
- लिथुआनिया
- पोलैण्ड
- यूक्रेन।

प्रश्न 16.
रूस के समाजवादियों ने सन् 1900 में कौनसी पार्टी का गठन किया?
उत्तर:
रूस के समाजवादियों ने सन् 1900 में सोशलिस्ट रेवलूशनरी पार्टी (समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी) का गठन किया।

प्रश्न 17.
किसानों के सवाल पर लेनिन का क्या मानना था?
उत्तर:
लेनिन का मानना था कि किसानों में एकजुटता नहीं थी, वे बंटे हुए थे। अपने विभेदों के चलते वे सभी समाजवादी आंदोलन का हिस्सा नहीं हो सकते थे।

प्रश्न 18.
विचारधारा के आधार पर रूस में समाजवादियों के दो मुख्य दल कौनसे थे?
उत्तर:

- बोल्शेविक
- मेन्शेविक।

प्रश्न 19.
बोल्शेविक दल का मुखिया कौन था?
उत्तर:
बोल्शेविक दल का मुखिया ब्लादिमीर लेनिन था।

प्रश्न 20.
जदीदी से आपका क्या आशय है?
उत्तर:
रूसी साम्राज्य में सक्रिय मुस्लिम सुधारवादी जदीदी कहलाते थे।

प्रश्न 21.
वास्तविक वेतन से क्या आशय है?
उत्तर:
वास्तविक वेतन इस बात का पैमाना है कि किसी व्यक्ति के वेतन से वास्तव में कितनी चीजें खरीदी जा सकती हैं।

प्रश्न 22.
रूस में संसद को किस नाम से पुकारते हैं?
उत्तर:
रूस में संसद को ड्यूमा के नाम से पुकारते हैं।

प्रश्न 23.
ड्यूमा किसे कहते हैं?
उत्तर:
रूस की संसद को ड्यूमा कहते हैं।

प्रश्न 24.
रूस में प्रथम ड्यूमा का गठन कब हुआ?
उत्तर:
रूस में प्रथम ड्यूमा का गठन सन् 1905 में हुआ।

प्रश्न 25.
सेंट पीटर्सबर्ग का नाम बदलकर कौनसा नया नाम रखा गया?
उत्तर:
पेत्रोग्राद।

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1.
'पेरिस कम्यून' किन दो बातों की वजह से आज भी याद रखा जाता है?
उत्तर:
'पेरिस कम्यून' को निम्न दो बातों की वजह से आज भी याद रखा जाता है-

- मजदूरों के लाल झंडे का उदय इसी घटना से हुआ था-कम्यूनार्डो (क्रांतिकारियों) ने अपने लिए यही झंडा चुना था।
- 'मार्सेयेस' गीत, जो इस घटना के बाद पेरिस कम्यून और मुक्ति संघर्ष का प्रतीक बन गया। इस गीत को मूलतः 1792 में युद्ध गीत के रूप में लिखा गया था। बाद में इसका नाम मार्सिले हो गया तथा अब यह फ्रांस का राष्ट्रगान है।

प्रश्न 2.
उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में बहुत-से कामकाजी स्त्री-पुरुष उदारवादी और रैडिकल समूहों व पार्टियों के इर्द-गिर्द गोलबन्द क्यों हो गये? चार कारण दीजिए।
उत्तर:

https://www.evidyarthi.in/

- ये लोग जन्मजात मिलने वाले विशेषाधिकारों के विरुद्ध थे।
- श्रम, उद्यमशीलता एवं व्यक्तिगत प्रयास में उनका गहरा विश्वास था।
- उनकी मान्यता थी कि यदि हरेक को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता दी जाए, गरीबों को रोजगार मिले और पूँजी वालों को बेरोकटोक काम करने का मौका मिले तो समाज तरक्की कर सकता है।
- अगर मजदूर स्वस्थ हों, नागरिक पढ़े-लिखे हों तो इस व्यवस्था का भरपूर लाभ लिया जा सकता है।

प्रश्न 3.
लेनिन की प्रमुख माँगें कौनसी थीं? उन्हें किस नाम से जाना जाता है?
अथवा
1917 की अक्टूबर क्रान्ति से पहले रूसी क्रान्तिकारियों की प्रमुख मांगें क्या थीं?
अथवा
अप्रैल थीसिस क्या थी? इसकी प्रमुख मांगों को बताइये।
उत्तर:
अप्रैल, 1917 में बोल्शेविकों के निर्वासित नेता लेनिन रूस लौट आये। उनका कहना था कि अब सोवियतों को सत्ता अपने हाथ में ले लेनी चाहिए। लेनिन ने अप्रैल में ही बयान जारी कर तीन मांगें कीं, जिन्हें 'अप्रैल थीसिस' के नाम से जाना जाता है। इसकी तीन मांगें निम्न प्रकार हैं-

- युद्ध समाप्त किया जाये।
- सारी जमीन किसानों के हवाले की जाये।
- बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया जाये।

प्रश्न 4.
किस सीमा तक प्रथम विश्वयुद्ध को रूस की सन् 1917 ई. की क्रांति के लिए उत्तरदायी माना जाता है?
उत्तर:
प्रथम विश्व युद्ध के प्रति रूसी जनता में असन्तोष की भावना व्याप्त थी क्योंकि-

- सन् 1917 तक लगभग 70 लाख लोग मारे जा चुके थे।
- युद्ध के फलस्वरूप उद्योगों, फसलों व घरों की भारी तबाही हुई थी।
- देश के श्रमिकों को सेना में भेज दिया गया था जिसके कारण कृषि एवं उद्योग समाप्त होते गये।
- ज्यादातर अनाज सैनिकों का पेट भरने के लिए मोर्चे पर भेजा जाने लगा। इससे शहरों में रहने वालों के लिए रोटी और आटे की किल्लत हो गई। 1916 में रोटी की दुकानों पर अक्सर दंगे होने लगे।

इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के कारण रूस में 1917 की क्रान्ति की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई थीं।

प्रश्न 5.
'खूनी रविवार' घटना पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
उत्तर:
जनवरी 1905 में रूस में हड़ताली मजदूरों का एक जुलूस फादर गैपॉन के नेतृत्व में जब विंटर पैलेस (जार का महल) पहुँचा तो पुलिस और कोसैक्स ने मजदूरों पर हमला बोल दिया। इस घटना में 100 से ज्यादा मजदूर मारे गये तथा लगभग 300 मजदूर घायल हुए। यह रविवार का दिन था। जार की इस बर्बरतापूर्ण कार्यवाही की घटना को इतिहास में 'खूनी रविवार' के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 6.
उदारवादी तथा रैडिकल के विचारों में अन्तर को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
उदारवादी तथा रैडिकल के विचारों में अन्तर निम्न प्रकार थे-

उदारवादी	रैडिकल
1. उदारवादी वंश-आधारित शासकों की अनियंत्रित सत्ता के विरोधी थे। यह समूह प्रतिनिधित्व पर के बहुमत के समर्थन पर आधरित हो।	1. रैडिकल ऐसी सरकार के पक्षधर थे जो देश की आबादी आधारित निर्वाचित सरकार के पक्ष में था। परन्तु सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के पक्ष में नहीं था।
2. इसका मानना था कि वोट का अधिकार केवल सम्पत्तिधारियों को ही मिलना चाहिए।	2. ये सभी वयस्क नागरिकों को मताधिकार के समर्थक थे।
3. ये बड़े जमींदारों तथा सम्पन्न उद्योगपतियों को विशेषाधिकार देने के समर्थक थे।	3. ये बड़े जमींदारों तथा सम्पन्न उद्योगपतियों को प्राप्त किसी भी तरह के विशेषाधिकारों के खिलाफ थे।
4. ये निजी सम्पत्ति के पक्षधर थे।	4. ये भी निजी सम्पत्ति के विरोधी नहीं थे किन्तु केवल कुछ लोगों के पास सम्पत्ति के संकेन्द्रण का विरोध करते थे।

प्रश्न 7.
औद्योगीकरण द्वारा हुए सामाजिक व आर्थिक परिवर्तनों का वर्णन करो।
उत्तर:
औद्योगीकरण द्वारा निम्न सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन हुए-

- औद्योगीकरण के कारण अनेक नये उद्योग खुले तथा नये-नये औद्योगिक क्षेत्रों का विकास हुआ।
- रेलवे का काफी विकास एवं विस्तार हुआ।
- तेजी से शहरीकरण में वृद्धि हुई। नये शहर बसे।
- शहरीकरण से आवास की समस्या पैदा हुई, गंदी बस्तियों का विकास हुआ, साफ-सफाई का काम मुश्किल हुआ।
- औरतें-आदमी, बच्चे सब कारखानों में काम करने लगे।
- काम की पारी के घण्टे बहुत अधिक होते थे तथा मजदूरी कम होती थी।
- बेरोजगारी की समस्या आम थी। औद्योगिक वस्तुओं की मांग में गिरावट आने पर बेरोजगारी और तेजी से बढ़ जाती थी।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 8.
समाजवाद की कोई तीन विशेषताएँ बताइए।
उत्तर:
समाजवाद की तीन विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं-

- समाजवाद निजी सम्पत्ति की व्यवस्था को सभी सामाजिक समस्याओं की जड़ मानता है अतः वह निजी सम्पत्ति का विरोध करता है।
- समाजवाद के अन्तर्गत उत्पादन के समस्त साधनों पर सरकार का नियंत्रण होता है।
- समाजवाद के अनुसार यदि सम्पत्ति पर किसी एक व्यक्ति की बजाय पूरे समाज का नियंत्रण हो तो साझा सामाजिक हितों पर ज्यादा अच्छी तरह ध्यान दिया जा सकता है।

प्रश्न 9.
समाजवादियों के अनुसार 'कोऑपरेटिव' क्या थे? कोऑपरेटिव निर्माण के विषय में रॉबर्ट ओवेन तथा लुई ब्लांक के क्या विचार थे?
उत्तर:
कोऑपरेटिव-समाजवादियों के अनुसार कोऑपरेटिव ऐसे लोगों के समूह थे जो मिलकर चीजें बनाते थे तथा मुनाफे को प्रत्येक सदस्य द्वारा किये गये काम के हिसाब से आपस में बांट लेते थे।

कॉऑपरेटिव निर्माण के विषय में राबर्ट ओवेन के विचार-राबर्ट ओवेन इंग्लैण्ड के जाने-माने उद्योगपति थे। इन्होंने इंडियाना (अमेरिका) में नया समन्वय (New Harmony) के नाम से एक नये तरह के समुदाय की रचना का प्रयास किया।

कॉऑपरेटिव निर्माण के विषय में लुई ब्लांक के विचार-फ्रांस के लुई ब्लांक मानते थे कि केवल व्यक्तिगत पहल से बहुत बड़े सामूहिक उद्यम नहीं बनाये जा सकते। वे चाहते थे कि सरकार पूँजीवादी उद्यमों की जगह सामूहिक उद्यमों को बढ़ावा दे।

प्रश्न 10.
20वीं सदी के प्रारम्भ में रूस की आर्थिक स्थिति कैसी थी?
उत्तर:
20वीं सदी के प्रारम्भ में रूस की आर्थिक स्थिति निम्न प्रकार थी-

- रूस एक कृषि प्रधान देश था। रूसी साम्राज्य की लगभग 85 प्रतिशत जनता कृषि कार्यों में लगी हुई थी। रूस अनाज का एक बड़ा निर्यातक था।
- उस समय रूस में उद्योग बहुत कम थे। ये कुछ खास क्षेत्रों तक सीमित थे। सेंट पीटर्सबर्ग तथा मास्को प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र थे।
- ज्यादातर कारखाने उद्योगपतियों की निजी सम्पत्ति थे।
- देहात की ज्यादातर जमीन पर किसान खेती करते थे लेकिन विशाल सम्पत्तियों पर सामंतों, राजशाही तथा ऑर्थोडॉक्स चर्च का कब्जा था।

प्रश्न 11.
रूस में बोल्शेविक तथा मेन्शेविक दल का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
20वीं शताब्दी के प्रारंभ में रूस की 'समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी' दो खेमों में विभाजित हो गई-

1. वोल्शेविक और
2. मेन्शेविक। यथा

(1) बोल्शेविक-बोल्शेविक दल का मुखिया व्लादिमीर लेनिन था। इस दल के साथ औद्योगिक मजदूरों की बहुत अधिक संख्या थी तथा यह दल क्रांतिकारी विचारधारा में विश्वास रखता था। इनकी सोच थी कि जार शासित रूस जैसे दमनकारी समाज में पार्टी अत्यन्त अनुशासित होनी चाहिए तथा अपने सदस्यों की संख्या व स्तर पर उसका पूरा नियंत्रण होना चाहिए।

(2) मेन्शेविक-यह दल मानता था कि पार्टी में सभी को सदस्यता दी जानी चाहिए। यह दल श्रमिक वर्ग के साथ-साथ अन्य वर्गों के सहयोग से जनतन्त्र की स्थापना करना चाहता था।

प्रश्न 12.
सन् 1917 ई. की क्रान्ति के बाद रूस प्रथम विश्व युद्ध से क्यों अलग हो गया?
उत्तर:
सन् 1917 ई. की क्रांति के बाद रूस प्रथम विश्वयुद्ध से अलग हो गया क्योंकि-

- रूस के क्रांतिकारी प्रारंभ से ही युद्ध का भारी विरोध कर रहे थे।
- प्रथम विश्व युद्ध में सन् 1917 तक 70 लाख से भी अधिक रूसी लोग मारे जा चुके थे।
- रूस की जनता अब अपनी आंतरिक समस्याओं का समाधान चाहती थी।
- रूसी साम्राज्य को अनेक बार युद्धों में पराजय का सामना करना पड़ा था जिससे देश की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची थी।

प्रश्न 13.
सन् 1917 में हुई अक्टूबर क्रांति में लेनिन की भूमिका का वर्णन तीन बिन्दुओं में कीजिए।
उत्तर:
सन् 1917 में हुई अक्टूबर क्रांति में लेनिन की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी-

- अप्रैल, 1917 में लेनिन रूस लौट आया। उसने कहा कि अब सोवियतों को सत्ता अपने हाथों में ले लेनी चाहिए।
- लेनिन ने अप्रैल थीसिस द्वारा तीन मांगें की-(i) युद्ध समाप्त किया जाये (ii) सारी जमीन किसानों के हवाले की जाये (iii) बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया जाये।
- लेनिन ने 16 अक्टूबर, 1917 को सत्ता पर कब्जा करने के लिए लियॉन ट्रॉट्स्की के नेतृत्व में सोवियत की ओर से एक सैनिक क्रांतिकारी समिति का गठन कर दिया।

अन्ततः लेनिन के प्रयत्नों से बोल्शेविकों ने अक्टूबर क्रांति को अंजाम दे दिया।

प्रश्न 14.
प्रथम विश्वयुद्ध का रूसी साम्राज्य पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर:
प्रथम विश्वयद्ध का रूसी साम्राज्य पर बुरा प्रभाव पड़ा। इसके प्रमुख प्रभाव निम्न रहे-

- इस युद्ध में 1914 से 1916 के बीच जर्मनी तथा आस्ट्रिया में रूसी सेनाओं को भारी पराजय झेलनी पड़ी, जिससे रूसी साम्राज्य की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची।

https://www.evidyarthi.in/

- 1917 तक रूस के 70 लाख लोगों की मृत्यु युद्ध के कारण हो चुकी थी।
- युद्ध के फलस्वरूप उद्योगों, फसलों, घरों की भारी तबाही हुई तथा 30 लाख लोग बेघर होकर शरणार्थी बन गये थे।
- जवान तथा स्वस्थ लोगों को युद्ध में भेजा गया जिससे देश में मजदूरों की कमी हो गई।
- ज्यादातर अनाज सैनिकों का पेट भरने के लिए मोर्चे पर भेजा जाने लगा। इससे रोटी तथा आटे की कमी पैदा हो गई।
- इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध का रूसी साम्राज्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा।

प्रश्न 15.
रूस की अक्टूबर, 1917 की क्रांति की व्याख्या करें।
उत्तर:

- अप्रैल, 1917 में लेनिन निर्वासन के पश्चात् रूस लौट आए। उनका मानना था कि सोवियतों को सत्ता अपने हाथ में ले लेनी चाहिए। उन्होंने अप्रैल थीसिस द्वारा तीन मांगें जारी की।
- जुलाई, 1917 में बोल्शेविकों ने अपनी मांगों के समर्थन में अनेक विशाल प्रदर्शनों का आयोजन किया।
- 16 अक्टूबर 1917 को लेनिन ने पेत्रोग्राद सोवियत एवं बोल्शेविक पार्टी को सत्ता पर कब्जा करने के लिए राजी कर लिया एवं लियॉन ट्रॉट्स्की' के नेतृत्व में सैनिक क्रांतिकारी समिति का गठन किया।
- 24 अक्टूबर को विद्रोह शुरू हो गया। क्रांतिकारी समिति ने अपने समर्थकों से कहा कि सरकारी दफ्तरों पर कब्जा कर लें तथा मंत्रियों को भी गिरफ्तार कर लें। विंटर पैलेस पर कब्जा करने के लिए ऑरोरा नामक युद्धपोत भेज दिया गया।
- अंततः बोल्शेविकों ने इस क्रांति के माध्यम से मास्को-पेत्रोग्राद क्षेत्र पर दिसम्बर माह में कब्जा कर लिया।

प्रश्न 16.
अक्टूबर क्रान्ति के पश्चात् लेनिन ने ऐसे कौनसे कदम उठाये जिससे रूस में अधिनायकवाद सहज दिखाई दिया? कलाकारों और लेखकों ने बोल्शेविक दल का समर्थन क्यों किया?
उत्तर:
अक्टूबर क्रान्ति के पश्चात् लेनिन के निम्न कार्यों ने अधिनायकवाद को सहज बना दिया-

- ज्यादातर उद्योगों और बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर उनका स्वामित्व और प्रबंधन सरकार के नियंत्रण में ले लिया गया।
- जमीन को सामाजिक सम्पत्ति घोषित कर दिया गया।
- अभिजात्य वर्ग द्वारा पुरानी पदवियों के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई।
- सेना और सरकारी अफसरों की वर्दियाँ बदल दी गईं।
- नवंबर, 1917 में बोल्शेविकों ने संविधान सभा के लिए चुनाव कराए लेकिन इन चुनावों में उन्हें बहुमत नहीं मिल पाया। जनवरी, 1918 में असेंबली ने बोल्शेविकों के प्रस्तावों को खारिज कर दिया और लेनिन ने असेंबली बर्खास्त कर दी।
- रूस को एकदलीय राजनीतिक व्यवस्था वाला देश बना दिया गया। बोल्शेविक पार्टी अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस के लिए होने वाले चुनावों में हिस्सा लेने वाली एकमात्र पार्टी रह गई।
- गुप्तचर पुलिस बोल्शेविकों की आलोचना करने वालों को दंडित करती थी।
- बहुत सारे युवा लेखकों और कलाकारों ने भी बोल्शेविक दल का समर्थन किया क्योंकि वह समाजवाद और परिवर्तन के प्रति समर्पित था।

प्रश्न 17.
1917 की बोल्शेविक क्रांति के बाद रूस में हुए गृह युद्ध का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
1917 की बोल्शेविक क्रांति के बाद रूस में बड़े पैमाने पर गृह युद्ध फैल गया।

- बोल्शेविकों द्वारा जमीन के पुनर्वितरण के आदेश के कारण रूसी सेना टूटने लगी। भूमि पुनर्वितरण के लिए सैनिक सेना छोड़कर घर जाने लगे।
- गैर-बोल्शेविक समाजवादियों, उदारवादियों तथा राजशाही के समर्थकों के नेताओं ने बोल्शेविकों से लड़ने के लिए टुकड़ियाँ संगठित की।
- इन टुकड़ियों तथा बोल्शेविकों के बीच चले गृह युद्ध के दौरान लूटमार, डकैती तथा भुखमरी जैसी समस्याएँ बड़े पैमाने पर फैल गईं।
- बोल्शेविक उपनिवेशिकों ने समाजवाद की रक्षा के नाम पर स्थानीय राष्ट्रवादियों का बड़े पैमाने पर कत्लेआम किया।
- जनवरी, 1920 तक भूतपूर्व रूसी साम्राज्य के ज्यादातर हिस्सों पर बोल्शेविकों का नियंत्रण कायम हो गया था।

प्रश्न 18.
केन्द्रीकृत नियोजन व्यवस्था क्या थी? इसका क्या प्रभाव हुआ?
उत्तर:
केन्द्रीकृत नियोजन-सोवियत संघ में समाजवादी समाज के निर्माण तथा नियोजित विकास के लिए सरकार द्वारा लागू की गई व्यवस्था केन्द्रीकृत नियोजन कहलाती है। इसमें अफसर यह देखते थे कि अर्थव्यवस्था किस तरह काम कर सकती है। इस आधार पर वे पांच साल के लिए लक्ष्य तय कर देते थे। इसी आधार पर उन्होंने पंचवर्षीय योजनाएँ बनानी शुरू की।

प्रभाव-

- कीमतों पर नियंत्रण रखा गया।
- केन्द्रीकृत नियोजन से आर्थिक विकास को तीव्र गति मिली।
- औद्योगिक उत्पादन में तेज गति से वृद्धि हुई।
- नये-नये औद्योगिक शहर अस्तित्व में आये।

प्रश्न 19.
रूसी अर्थव्यवस्था में स्टालिन द्वारा किये गये दो परिवर्तन लिखिए। स्टालिन ने आलोचकों का किस तरह मुकाबला किया?
उत्तर:
रूसी अर्थव्यवस्था में स्टालिन द्वारा निम्न दो परिवर्तन किये गये-

- केन्द्रीकृत नियोजित विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ लागू की।
- कृषि में सामूहिकीकरण कार्यक्रम शुरू किया, जिसमें किसानों को सामूहिक खेतों (कोलखोज) में काम करने का आदेश दिया गया।

स्टालिन द्वारा आलोचकों का मुकाबला-

https://www.evidyarthi.in/

- स्टालिन ने अपने आलोचकों को सख्त सजाएँ दीं।
- बहुत सारे लोगों को निर्वासन या देश-निकाला दे दिया गया।
- आलोचकों पर समाजवाद के विरुद्ध साजिश रचने का आरोप लगाया गया। अनेक लोगों को जेलों में या श्रम शिविरों में भेज दिया गया तथा अनेकों को मार दिया गया।

प्रश्न 20.
स्टालिन ने खेतों के सामहिकीकरण का फैसला क्यों लिया?
उत्तर:
स्टालिन ने निम्न परिस्थितियों व कारणों से खेतों के सामूहिकीकरण का फैसला लिया-

- अनाज का संकट-1927-28 के आस-पास रूस के शहरों में अनाज का भारी संकट पैदा हो गया था क्योंकि किसान सरकार द्वारा निर्धारित कीमत पर अनाज बेचने के लिए तैयार न थे।
- किसानों से जबरन अनाज खरीदना-1928 में पार्टी के सदस्यों ने किसानों से जबरन अनाज खरीदा तथा कुलकों के ठिकानों पर छापे मारे। लेकिन इसके बाद भी अनाज की कमी बनी रही।
- खेतों के सामूहिकीकरण का फैसला-इसके बाद स्टालिन ने खेती के सामूहिकीकरण का फैसला लिया। इसके पीछे यह तर्क दिया गया कि खेत बहुत छोटे-छोटे हैं, जिनमें आधुनिक खेती नहीं की जा सकती। इसलिए उत्पादन कम होता है। सामूहिकीकरण द्वारा बड़े खेत बनाकर आधुनिक खेती कर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।